بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुज़्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 18.12. 2015 मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

अब आसमान के नीचे केवल एक ही नबी और एक ही किताब है अर्थात हज़रत मुहज़्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो उत्तम एंव सर्वोच्च सब नबियों से तथा सज़्पूर्ण एंव परिपूर्ण समस्त रसूलों से और ख़ातमुल अंज़्बिया एंव ख़ैरुन्नास (सज़्पूर्ण मानव जाति के शुभ चिंतक) हैं। जिनके अनुसरण से ख़ुदाए तआला मिलता है तथा अंधकार के पर्दे उठते हैं और इसी संसार में वास्तविक मुक्ति के संकेत होने लगते हैं।

तशह्हुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जब मसीह मौऊद और महदी-ए-मअहूद होने का दावा किया, उस समय से लेकर आज तक अहमदियत के विरोधी अथवा तथाकथित आलिम आप पर बहुत सी आपत्तियाँ करते चले आ रहे हैं तथा आरोप लगाते चले आ रहे हैं और सबसे बड़ा, जो आरोप लगाते हैं ये लोग, वह यह है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने आपको, नऊज़ु बिल्लाह, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बड़ा समझते है और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में कुछ इस प्रकार के शब्दो का प्रयोग किया है जिनसे आपका अनादर होता है और यही आरोप ये लोग आज जमाअत के लोगों पर भी लगाते हैं। जिन सदाचार लोगों ने जब भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकें पढ़ीं, जमाअत का लिट्रेचर पढ़ा अथवा आपके प्रवचन सुने, उन्हें तुरन्त यह बात समझ में आ गई कि इन तथाकथित और उपद्रवी आलिमों ने केवल द्वेष उत्पन्न करने के लिए ये आरोप लगाए हैं, ये बातें की हैं।

इस समय, मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ वृत्तांत पेश करूंगा जो आपकी विभिन्न किताबों में उपलब्ध हैं। जब आपने **ब्राहीन-ए-अहमदिय्यः** की रचना फ़रमाई तथा जो आपने अन्तिम पुस्तक अपने निधन के समय लिक्खी अथवा इससे कुछ पहले, उसके हवाले पेश करूंगा। जिनमें आपने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्तर एंव प्रतिष्ठा के सज़्बंध में बयान फ़रमाया। **ब्राहीन-ए-अहमदिय्यः** में आप एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि ''अब आसमान के नीचे केवल एक ही नबी और एक ही किताब है अर्थात हज़रत मुहज़्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो उत्तम एंव सर्वोच्च सब नबियों से तथा सज़्पूर्ण एंव परिपूर्ण समस्त रसूलों से और ख़ातमुल अंज़्बिया एंव ख़ैरुन्नास (सज़्पूर्ण मानव जाति के शुभ चिंतक) हैं। जिनके अनुसरण से ख़ुदाए तआला मिलता है तथा अंधकार के पर्दे उठते हैं और इसी संसार में वास्तविक मुक्ति के संकेत होने लगते हैं और क़ुरआन शरीफ़ जो सच्चा एंव सज़्पूर्ण मार्ग दर्शन तथा प्रभाव पूर्ण तथ्यों पर आधारित है जिसके द्वारा ईश्वरीय ज्ञान एंव विवेक प्राप्त होता है तथा मानवीय अशुद्धियों से मन पवित्र होता है और इंसान अज्ञानता एंव मूर्खता तथा शंकाओं के पर्दों से मुक्ति पाकर विश्वस्त आस्था के स्तर तक पहुंच जाता है'' फिर

ब्राहीन-ए-अहमदिय्य: में ही आप फ़रमाते हैं ''और यह विनीत ज़ी उस वैभव पूर्ण नबी के तुच्छ सेवकों में से है कि जो सय्यदुर्रुसुल और सब रसूलों का मुकुट है। फिर अपनी पुस्तक **सुर्मा चश्मा-ए-आर्या** में आप आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्तर के विषय में लिखते हैं कि चूंकि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने पवित्र अंतर्मन तथा व्यापक विवेक व सत्य निष्ठा, सच्चाई तथा शुद्धता, अल्लाह तआला पर पूर्ण विश्वास एंव आज्ञापालन तथा इलाही इश्क़ की समस्त भावनाओं में सारे नबियों से बढ़कर और सर्वश्रेट व उत्तम व उच्च कोटि व दिव्य व शुद्ध थे इसी लिए अल्लाह जल्ला शान्हु ने उनको कुशलताओं की गन्ध से सुगन्धित किया तथा वह मन एंव हृदय जो समूचे अव्वलीन व आख़िरीन के मन एंव हृदय से अधिक विशाल एंव अधिक पवित्र तथा अधिक शुद्ध व अधिक प्रकाशमान था और इसी योग्य ठहरा कि उस पर ऐसी वह्यी नाज़िल हो कि जो समूचे अव्वलीन व आख़िरीन की वह्यिों से शक्ति शाली व सञ्पूर्ण व उच्च स्तरीय व श्रेष्ट होकर अल्लाह तआला के विशेषण दिखलाने के लिए एक अत्यंत स्पष्ट एंव विशाल तथा बड़ा दर्पण हो''

फिर 1891 में अपनी किताब **तौज़ी-ए-मराम** में वह्यी इलाही के उच्च स्तरीय प्रकाश का वर्णन करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि ''और यह अवस्था संसार में केवल एक ही इंसान को मिली है जो सञ्पूर्ण मानव है जिसपर समस्त मानवता का क्रम समाप्त हो गया है और क्षमता की परिधि सञ्पूर्ण हो गई है और वह वास्तव में अल्लाह तआला के द्वारा रचित जीवन रेखा का अन्तिम बिन्दु है (अर्थात अल्लाह तआला ने जो भी मानव रचना की है उसकी जो चरम सीमा है यदि रेखांकित किया जाए तो उसका अन्तिम सिरा है) जो इर्तफ़ा के समस्त स्तरों की चरम सीमा है (जो उच्च कोटि के स्तर पर पहुंचा हुआ है। फ़रमाया कि) अल्लाह की हिकमत के हाथ ने छोटी से छोटी रचना से तथा तुच्छ से तुच्छ सृष्टि के द्वारा जन्मों का क्रम आरञ्भ करके उसे उच्च स्तर तक पहुंचा दिया है जिसका नाम दूसरे शब्दों में मुहञ्मद है सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। जिसका अर्थ यह है कि अत्यधिक प्रशंसा किया गया अर्थात सञ्पूर्ण क्षमताओं का अस्तित्व, इस प्रकार जैसा कि प्राकृतिक रूप से उस नबी का उत्तम एंव श्रेष्ट स्थान था ऐसा ही प्रकट होने के रूप में भी उत्तम एंव उच्च स्तरीय स्थान वह्यी का उसको प्रदान हुआ और उच्च एंव श्रेष्ट स्तर मुहब्बत का उसको मिला। यह वह उच्च स्तर है कि मैं (फ़रमाया कि यह उच्च स्तर है कि मैं अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम) और मसीह (अर्थात ईसा अलैहिस्सलाम) दोनों इस स्तर तक नहीं पहुंच सकते

फिर 1892-93 की रचना है जो रूहानी ख़ज़ाइन के भाग, जिल्द पंचम में है, दो भाग हैं इसके **आईना कमालात-ए-इस्लाम** में उर्दू और अरबी भाग है। इसमें आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्तर के विषय में फ़रमाते हैं कि ''वह उच्च श्रेणी का नूर जो इंसान को दिया गया अर्थात सञ्पूर्ण इंसान को, वह फ़रिश्तों में नहीं था, सितारों में नहीं था, चाँद में नहीं था, सूरज में भी नहीं था, वह धरती के समुद्रों तथा दरयाओं में भी नहीं था, वह हीरा, पन्ना, बहुमूल्य रत्न और अलमास तथा मोती में भी नहीं था। इस प्रकार वह किसी धरती व आकाश की वस्तु में नहीं था। केवल इंसान में था, अर्थात सञ्पूर्ण मानव में जिसका सञ्पूर्ण व श्रेष्ट व उच्च स्तरीय व उच्चतम श्रेणी के मानव हमारे सय्यद व मौला सय्यदुल अंञ्बिया सय्यदुल अहया मुहञ्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं''

फिर जिल्द 8 में ही **रूहानी ख़ज़ाइन** की जो है ठोस प्रमाण यह भी 1894 का है। आप फ़रमाते हैं कि ''वह इंसान जो सञ्पूर्ण तथा सर्वाधिक सञ्पूर्ण मानव था और सञ्पूर्ण नबी था और समस्त बरकतों के साथ

आया जिसकी आध्यात्मिक नियुक्ति तथा धाक के कारण संसार की पहली प्रलय प्रकट हुई और एक मरा हुआ समूचा संसार उसके आने से जीवित हो गया। **वह मुबारक नबी ख़ातमुल अंज़्बिया इमामुल अस़्फ़िया ख़त्मुल मुर्सिलीन फ़ज़्रुन्नबिय्यीन जनाब मुहज़्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम** हैं। ऐ प्यारे ख़ुदा, उस प्यारे नबी पर वह रहमत और दरूद भेज जो दुनया के आरज़्भ से तू ने किसी पर न भेजा हो'' फिर 1895 की अपनी किताब आर्य धर्म में आप फ़रमाते हैं कि ''हम अपने पूरे शोध के कारण सय्यदुल मासूमीन तथा उन समस्त पवित्र आत्माओं का सरदार समझते हैं जो स्त्री के पेट से निकले हैं और उसको ख़ातमुल अंज़्बिया जानते हैं क्यूँकि उस पर सारी नबुव्वतें और सारी पवित्रताएँ और समस्त क्षमताएँ पूरी हो गईं'' फिर 1897 की आपकी पुस्तक है सिराजे मुनीर। इसमें आप एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि जब हम न्याय की दृष्टि से देखते हैं तो नबुव्वत की समूची श्रंखला में से उच्च श्रेणी का जवान मर्द और नबी और ज़िन्दा नबी और ख़ुदा का उच्चतम श्रेणी का प्यारा नबी केवल एक नबी को जानते हैं, केवल एक मर्द अर्थात वही नबियों का सरदार, रसूलों का स्वाभिमान, समस्त रसूलों का मुकुट जिसका नाम मुहज़्मद मुस्तुफ़ा अहमद मुजतुबा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है जिसके आधीन होकर दस दिन चलने वे वह प्रकाश मिलता है जो पहले इससे हज़ार वर्ष तक नहीं मिल सकता था।

फिर 1898 ई. की आपकी रचना है **किताबुल बरिय्य:** इसमें आप एक स्थान पर फ़रमाते हैं। हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निशान और चमत्कार दो प्रकार के हैं। एक वे जो आँजनाब के हाथ से अथवा आपके कथन या कर्म या आपकी दुआ से प्रकट हुए और ऐसे चमत्कारों की गणना लगभग तीन हज़ार है और दूसरे वे चमत्कार हैं जो आँजनाब की उज़्मत के द्वारा सदैव प्रकट होते रहते हैं और इस प्रकार के निशानों की गणना लाखों तक पहुंच गई है और कोई शताब्दी ज़ी नहीं हुई जिसमें ऐसे निशान प्रकट न हुए हों। अतः इस ज़माने में इस विनीत के द्वारा ये निशान दिखला रहा है। इन समस्त निशानों से जिनका क्रम किसी ज़माने में नहीं टूटता हम निःसन्देह जानते हैं कि ख़ुदा तआला का सबसे बड़ा नबी और सबसे प्यारा नबी मुहज़्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है क्यूँकि दूसरे नबियों की उज़्मतें एक अंधकार में पड़ी हुई हैं और उनके पास केवल पिछली बातें एंव कहानियाँ हैं। परन्तु यह उज़्मत सदैव ख़ुदा तआला से ताज़ा एंव नवीनतम निशान पाती है। ख़ुदा तआला ने प्रत्येक ज़माने में उस सज़्पूर्ण एंव पवित्र आत्मा के निशान दिखलाने के लिए किसी न किसी को भेजा है और इस ज़माने में मसीह मौऊद के नाम से मुझे भेजा है। फिर 1900 ई. में अपनी पत्रिका **अर्बओन न01** में जो रूहानी ख़ज़ाइन की जिल्द 17 में है उसमें आप फ़रमाते हैं कि मैं सच सच कहता हूँ कि ज़मीन पर वह एक ही इंसान सज़्पूर्ण आया है जिसकी भविष्य वाणियाँ एवं दुआएँ क़बूल होना तथा अन्य बातें प्रकट होना एक ऐसी बात है जो अब तक उज़्मत के सच्चे अनुयायिओं के द्वारा नदी की भांति मौजें मार रही है। इस्लाम के अतिरिक्त वह धर्म कहाँ और किधर है जो यह क्षमता एंव शक्ति अपने अन्दर रखता है और वे लोग कहाँ और किस देश में रहते हैं जो इस्लाम की बरकतों एंव निशानों की तुलना कर सकते हैं।

फिर 1902 ई. की अपनी किताब **कश्तीए नूह** में आप फ़रमाते हैं कि मानव जाति के लिए इस धरती पर अब कोई किताब नहीं परन्तु क़ुरआन, और समस्त मानव जाति के लिए अब कोई रसूल और सिफ़ारशी नहीं परन्तु मुहज़्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, इस लिए तुम प्रयास करो कि सच्ची मुहब्बत इस भव्य नबी के साथ रक्खो और उसके अतिरिक्त को उस पर किसी प्रकार की बड़ाई मत दो ताकि आसमान पर तुम मुक्ति प्राप्त लिक्खे जाओ। फिर 1902 ई. की ही एक अपनी किताब **नसीम-ए-दावत** में आप फ़रमाते हैं कि उस

शक्ति शाली, सञ्पूर्ण एंव सच्चे ख़ुदा को हमारी रूह और हमारे अस्तित्व का कण कण सजदा करता है जिसके हाथ से प्रत्येक आत्मा तथा प्रत्येक सृष्टि का कण अपनी समस्त क्षमताओं के साथ प्रकट हुआ और जिसके अस्तित्व के कारण प्रत्येक अस्तित्व क़ायम है और कोई चीज़ न उसके संज्ञान से बाहर है न उसके उपयोग से और न ही उसकी रचना से और हज़ारों दरूद और सलाम और रहमतें और बरकतें उस पाक नबी मुहञ्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हों जिसके द्वारा हमने वह ज़िन्दा ख़ुदा पाया, वह हमारा सच्चा ख़ुदा असंञ्य बरकतों वाला है तथा असंञ्य विशेषणों वाला तथा असंञ्य सौन्द्रीय वाला तथा अत्यंत उपकारों वाला, उसके अतिरिक्त कोई ख़ुदा नहीं और यह ख़ुदा हमें आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कृपा से मिला। फिर 1903 ई. की अपनी रचना **लैक्चर सियालकोट** में आप फ़रमाते हैं कि अतः यह समस्त बिगाड़ उन धर्मों में पैदा हो गए जिनमें से कुछ इस योग्य भी नहीं कि उनका वर्णन किया जाए और जो इंसान की पवित्रता के भी विरोधी हैं। ये समस्त निशानियाँ इस्लाम की आवश्यकता के लिए थीं (पुराने धर्मों में जो बिगाड़ पैदा हुए वे इस लिए थे कि इस्लाम को आना था) फ़रमाया कि एक बुद्धिमान को स्वीकार करना पड़ता है कि इस्लाम से कुछ दिन पहले समस्त धर्म बिगड़ चुके थे और आध्यात्मिकता को खो चुके थे। अतः हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सत्य को प्रकट करने वाले एक महान पुर्नोत्थान करने वाले थे जो गुम हो चुकी सच्चाई को दुनया में लाए। इस स्वाभिमान में हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तुलना में कोई भी नबी कि आपने समूचे संसार को एक प्रकार की पथभ्रष्टता में पाया और फिर आपके प्रकट होने से वह अंधकार नूर में बदल गया।

फिर 1905 ई. की अपनी रचना **ब्राहीन-ए-अहमदिय्यः** जिल्द पंचम में आप फ़रमाते हैं कि हज़ार हज़ार धन्यवाद उस ख़ुदा वन्द करीम का है जिसने ऐसा मज़हब हमें प्रदान किया जो ख़ुदा दानी और ख़ुदा तर्सी का एक ऐसा माध्यम है जिसका उदाहरण कभी तथा किसी ज़माने में नहीं पाया गया और हज़ारों दरूद उस मासूम नबी पर जिसके कारण हम इस पवित्र धर्म में प्रविष्ट हुए और हज़ारों रहमतें नबी करीम के असहाब पर हों जिन्होंने अपने ख़ूनों से इस बाग़ को सींचा।

फिर 1907 ई. की आपकी रचना **हक़ीक़तुल वह्यी** है, इसमें आपने फ़रमाया कि अतः मैं सदैव आश्चर्य जनक दृष्टि से देखता हूँ कि यह अरबी नबी जिसका नाम मुहञ्मद है, हज़ार हज़ार दरूद और सलाम उस पर, यह कितना उच्च कोटि का नबी है उसके उच्च स्तर की चरम सीमा ज्ञात नहीं हो सकती और उसकी पवित्रता का अनुमान लगाना इंसान का काम नहीं। खेद है कि जैसा पहचानने का हक़ है उसके स्तर को नहीं पहचाना गया। वह तौहीद जो दुनया से गुम हो चुकी थी वही एक पहलवान है जो इसको पुनः दुनया में लाया। उसने ख़ुदा से अत्यधिक प्रेम किया और मानव जाति की सहानुभूति में अत्यधिक उसकी जान घुली इस लिए ख़ुदा ने जो उसके दिल के भेद का जानने वाला था उसको समस्त नबियों तथा समस्त अव्वलीन व आख़िरीन पर श्रेष्टता प्रदान की और उसकी शुभ कामनाएँ उसके जीवन में उसको प्रदान कीं। वही है जो प्रत्येक कृपा का स्रोत है और वह व्यक्ति जो उसकी मर्यादा को स्वीकार किए बिना किसी कृपा का दावा करता है, वह इंसान नहीं बल्कि शैतान की संतान है।

फिर 1908 ई. की अपनी रचना **चश्मा-ए-मअरिफ़त** में आप फ़रमाते हैं कि दुनया में करोड़ों ऐसी पवित्रात्माएँ हुई हैं तथा आगे भी होंगी परन्तु हमने सबसे बढ़कर और सबसे उत्तम तथा सर्वश्रेष्ट उस मर्द को पाया है जिसका नाम मुहञ्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا उन क़ौमों के बुज़ुर्गों की चर्चा तो रहने दो जिनका हाल क़ुरआन शरीफ़ ने बयान नहीं किया। हम केवल उन नबियों के विषय में अपने विचार प्रकट करते हैं जिनका वर्णन क़ुरआन शरीफ़ में है। जैसे हज़रत मूसा, हज़रत दाऊद, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तथा अन्य नबी। अतः हम ख़ुदा की क़सम खाकर कहते हैं कि यदि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनया में न आते तथा क़ुरआन शरीफ़ नाज़िल न होता तथा वे बरकतें हम स्वयं अपनी आँखों से न देखते, जो हमने देख लिए तो उन समस्त नबियों का सत्य हम पर न सन्देह पूर्ण रह जाता।

फिर **चश्मा-ए-मअरिफ़त** में ही आप फ़रमाते हैं कि अब सोचना चाहिए कि क्या यह सज़्मान, क्या यह श्रेष्टता, क्या यह उच्च कोटि, क्या यह प्रताप, क्या ये हज़ारों आसमानी निशान, क्या ये हज़ारों अल्लाह की बरकतें, झूठे को भी मिल सकती हैं? हमें बड़ा गर्व है कि जिस नबी अलैहिस्सलाम का हमने दामन पकड़ा है ख़ुदा का उस पर बड़ा ही फ़ज़्ल है। वह ख़ुदा तो नही परन्तु उसके माध्यम से हमने ख़ुदा को देख लिया है। उसका मज़हब जो हमें मिला है, ख़ुदा की शक्तियों का दर्पण है। यदि इस्लाम न होता तो इस ज़माने में बात को समझना कठिन था कि नबुव्वत क्या चीज़ है तथा क्या चमत्कार भी हो सकते हैं और क्या वह अल्लाह के क़ानून का अंश हैं? इस समस्या का इस नबी के स्थाई फ़ैज़ ने निवारण किया और उसी के द्वारा हम अब दुनया की अन्य क़ौमों की भांति केवल कहानियाँ सुनाने वाले नहीं हैं बल्कि ख़ुदा का नूर तथा ख़ुदा की आसमानी सहायता हमारे संग है। हम क्या चीज़ हैं जो उसका धन्यवाद कर सकें कि वह ख़ुदा जो दूसरों के लिए गुप्त है तथा वह गुप्त शक्ति जो अन्य लोगों के लिए पर्दों में छिपी हुई है। वह प्रतापी ख़ुदा केवल इस नबी करीम के माध्यम से हम पर प्रकट हो गया।

अतः इन आलिमों को आप पर यह आपत्ति है कि क्यूँ अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे अनुसरण एंव इश्क़ के कारण कलाम किया। अल्लाह तआला ने क्यूँ अपनी निकटता के वरदान से आपका सज़्मान किया। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अथवा अहमदिया जमाअत नहीं बल्कि ये तथाकथित आलिम लोग इस आरोप के नीचे आते हैं कि अब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़ैज़ जारी नहीं है, नऊज़ु बिल्लाह। अल्लाह तआला की शक्तियाँ एंव विशेषण सीमित हो गए हैं। अतः यदि आरोप हो सकता है तो इन लोगों पर लगता है। हज़रत मसीह मौऊद तो फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला की शक्तियाँ अब भी काम कर रही हैं।

फिर चश्मा-ए-मअरिफ़त में ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्तर एंव श्रेणी तथा आपके द्वारा जारी फ़ैज़ के विषय में फ़रमाते हैं कि फिर जब हमारे बुज़ुर्ग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनया में प्रकट हुए तो एक महान क्रान्ति दुनया में आई और थोड़े ही दिनों में वह अरब महाद्वीप जो बुतों को पूजने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं जानता था, एक समुद्र की भांति तौहीद से भर गया। इसके अतिरिक्त यह आश्चर्य जनक बात है कि हमारे सय्यद व मौला आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जितनी बड़ी संज़्या में ख़ुदा तआला की ओर से निशान एंव चमत्कार मिले, वे केवल उस ज़माने तक सीमित नहीं थे बल्कि उनका क्रम क़यामत तक जारी है और पहले ज़मानों में जो कोई नबी होता था वह किसी पिछले नबी की उज़्मत नहीं कहलाता था यद्यपि उसके दीन का सहायक होता है तथा उसको सच्चा जानता था परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह एक विशेष श्रेष्टता प्रदान की गई है कि वे इन अर्थों में

ख़ातमुल अंज़िया हैं कि एक तो नबुव्वत की समस्त श्रेष्टताएँ उन पर समाप्त हैं तथा दूसरे यह कि उनके बाद कोई नई शरीअत लाने वाला रसूल नहीं और न कोई ऐसा नबी है जो उनकी उज़्मत से बाहर हो बल्कि प्रत्येक को जो ख़ुदा से कलाम करने का वरदान मिलता है वह उन्हीं के फ़ैज़ तथा उन्हीं के माध्यम से मिलता है और वह उज़्मती कहलाता है, न कि कोई स्वतंत्र नबी।

अतः इस प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी अल्लाह तआला से सूचना प्राप्त करके अपने आपको उज़्मती नबी होने की घोषणा फ़रमाई, आपने अपने लिए। फिर फ़रमाते हैं कि मानव जाति के ध्यानाकर्षण तथा स्वीकार करने का यह हाल है कि आज कम से कम बीस करोड़ प्रत्येक वर्ग के मुसलमान आपकी ग़ुलामी में सतर्कता पूर्ण खड़े हैं तथा जब से आपको ख़ुदा ने पैदा किया है बड़े बड़े विराट बादशाह जो एक दुनया को (यह उस ज़माने की संज़्या बता रहे हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जो आपके ज़माने में थी) पराजित करने वाले थे, आपके क़दमों पर तुच्छ सेवकों की भांति गिर रहे हैं और उस समय के दरिद्र चाकरों की भांति स्वयं को आँजनाब के सेवकों में समझते हैं और नाम लेने से गद्दी से नीचे उतर आते हैं। यह स्तर बयान फ़रमा रहे हैं, और यह जो आरोप है आप पर कि नऊज़ु बिल्लाह दूसरे मुसलमानों को मुसलमान नहीं समझते आप तो फ़रमा रहे हैं कि पूरे विश्व के मुसलमान जो हैं वे आपकी ग़ुलामी में गर्व अनुभव करते हैं, केवल अहमदी ही नहीं। अतः यह स्तर एंव श्रेष्टता है आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने समझी तथा दुनया को बताया और अपने मानने वालों को इसका ज्ञान दिया। यदि हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने वाले न होते तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सौन्द्रय व उत्तमता व श्रेष्टता के स्तर को हम कदापि न जान सकते। विरोधी कहते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आरज़्भ में कुछ और कहते थे और बाद में अपनी सोच बदल ली और नऊज़ु बिल्लाह व्यक्तिगत स्वार्थ प्राप्त करने लग गए। ये सारे लेख जो मैंने 1880 ई. से लेकर 1908 ई. तक जो आपके निधन का वर्ष है, पेश की हैं। इन उद्धरणों में कहीं भी एक स्थान पर भी ऐसा झोल नहीं है जो एक दूसरे का समर्थन न करता हो। प्रत्येक स्थान पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्तर व श्रेष्टता को पहले से बढ़कर आप बयान फ़रमा रहे हैं। अपने आपको यदि कहीं नबी कहा भी है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में।

अल्लाह तआला इन स्वार्थियों के चुंगल से उज़्ज़त-ए-मुस्लिमा को बचाए तथा ये आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ को मानने वाले हों और यही एक साधन और माध्यम है जो उज़्मत-ए-मुस्लिमा की साख को पुनः स्थापित कर सकता है। अल्लाह तआला हमें भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकें एंव कथन पढ़ने और इन्हें समझने की क्षमता प्रदान करे और अल्लाह तआला आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के माध्यम से हमें भी अपने तक पहुंचने का उपयुक्त ज्ञान भी अता फ़रमाए और तौफ़ीक़ भी अता फ़रमाए।